



## दैवज्ञाभरण

पण्डितत्रिवेणीदत्तात्मजशम्भुनाथकृत

जिसमें

सम्पूर्ण जातक भेद फलयुक्त सुन्दर छन्दों  
में अतिस्पष्ट रीति से रचित है

इसनवीनप्रबन्धके अभ्यासकरनेवाले सुगमता  
से तीनोंकाल का फल प्रकटकरसकेंगे

बाजपेयि पण्डितरामरत्न के प्रबन्ध से

तीसरी बार

5

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेखानेमें छापागया

सितम्बर सन् १८९२ ई० ॥



# दैवज्ञाभरण

श्लोक ॥

शिवसुतंसततंत्रिदशस्तुतं गजमुखंविबुधव्रजबुद्धिदम् ।  
गिरिसुताकरसारसलालितं गणपतिसदयंसदयंभजे ॥

दो० ॥ श्रीश्यामा शंकर चरण बन्दों मंगल कारि ।  
सर्वसिद्धि विधि बुद्धि प्रद भूमिदेव भयहारि २ श्रीदै-  
वज्ञाभरण यह विरच्यो ग्रन्थ नवीन । जाहि सुने ज्यो-  
तिषी मन हर्षित होइ प्रवीन ३ श्रीगणेश शुकदेव मत  
जो भाषेहु जगमाहिं । शम्भुनाथ शिशुबोध हित भाषा  
विरचत ताहिं ४ लग्नमूर्ति तनु उदय बपु १ प्रथम  
भावको नाम । कौष अर्थ धन २ दूसरो गेह जानु मति  
धाम ५ आता सहज सहोदरो यह ३ तृतीय गृह जानु ।  
अम्बा तूर्य्य तुरीय सुख ४ जान चतुर्थ बखानु ६ विद्या  
बाचा पुत्र सुत ५ जानो पंचमभाव । बैरि शत्रु रिपु द्वैष्य  
क्षत ६ षष्ठभवन को नाव ७ द्यून मदन मद कामिनी ७  
जानिय सप्तम गेह । रन्ध्र छिद्र मृति निधन लय ८  
अष्टम गृह सुनिलेह ८ धर्म भाग्य शुभ ९ नवम गृह  
दशम राज्य नभकर्म १० लाभ एकादश ११ जानिये  
रिष्क १२ द्वादशो संघ ६ ॥ चौ० ॥ लग्न चतुर्थ सप्त  
दशधामा । कंठक केन्द्र चतुष्टय १०।७।४।१ नामा ॥  
पञ्चम नवम त्रिकोण कहावै । बुध रिपु ६ अष्टम ८ व्यय १२



त्रिकगावै ॥ पञ्चम अष्टमलाभ द्वितीया । पणफरसं  
 जकगुणगणनीया ॥ द्वादश षष्ठ भवन अरुभ्राता । आ-  
 पोक्लिम संज्ञक विख्याता ॥ दशम तृतीय लखैएकचरणा  
 नवपञ्चम द्विचरणते वरणा ॥ चतुरष्टमत्रि चरण गृह  
 देखै । सप्तमपूरण दृष्टिनिरेखै ॥ मेषवृषभ मृगकन्यावा-  
 सी । कर्कमीन तुलथिर ग्रहराशी ॥ सूर्यादिक ग्रह उच्च  
 वखानो । उच्चते सप्तम नीच सुजानो ॥ कुजभार्गव बुध  
 चंद्रदिनेशा । बुधकविमंगल गुरु अमरेशा ॥ शौरिमंद  
 अंगिरा कुमारा । जासुतेराशि नाथ निरधारा ॥ शशि  
 सुतबाल तरुण अंगारा । शुक्रचन्द्र मध्यम वयधारा ॥  
 गुरुरविशानि स्थविरवखाना । देहि जनहिफल वयस  
 समाना ॥ अरुण वरण मंगल तमजेता । सौम्यहरितक  
 विशशितनशेता ॥ वाक्पति पीतशनैश्चर नीला । राहु  
 केतुशानि वर्णसभीला ॥ अजवृष वृश्चिक हरिवनबासी ।  
 तुलामिथुन कन्याधनुराशी ॥ हैजनचर जलचर परबी-  
 ना । मकर कुम्भ और्कर्कट मीना ॥ चर स्थिर औ द्वैत स्व-  
 भावा । मेषादिक राशिहि बुधगावा ॥ वनचर जनचर  
 जलचर आदी । राशिस्वभाव कहै श्रुति स्वादी ॥ दो० ॥  
 नंदाभदा औ जयारिक्ता पूर्णानाम । प्रतिपदादि तिथिक्र-  
 महिंते भाषहि मति अभिराम १० ॥ छन्दभूलना ॥ सूर्य  
 कोमित्र शशि देवगुरु मंगलो सौम्य समशुक्र शनिशत्रु  
 ताके । चंद्रको सूर्यबुध मित्रसम अन्यग्रह मित्रशशि  
 सूर्य गुरुभूमि जाके ॥ शत्रुशानि शुक्रसम सौम्य बुधके  
 सुहृद भौमगुरु मंद सम शत्रुचन्दा । देवगुरुके सुहृद  
 भौम रवि चन्द्रमा शत्रुबुध शुक्रसम भाव मन्दा ॥ शुक्रके



## दैवज्ञाभरण ।

४ मित्र बुधमंद समभौम गुरु चन्द रवि शत्रु अथमन्देकेरो ।  
 मित्रबुध भार्गवौ शत्रुरवि चंदकुज देवता गुरुसमोविज्ञ  
 टेरो ॥ आपने गेह सम्पूर्णबल खेचरो मित्र गृह अर्द्धबल  
 वान्नभोगा । शत्रुगृह मेषवर एक चरणासबल अस्तगत  
 खेठ नहिंवीर्य योगा १४ ॥ दो० ॥ श्री गुरुरामदयाल  
 प्रभुचरण सरोरुह ध्याइ । शम्भुनाथ यह ग्रंथ मो रचि  
 संज्ञा अध्याइ १५ ॥ इति श्रीमद्राधाराधलध्वलध्ववर्णव-  
 णिप्रकाण्डियशष्काण्डमण्डित पण्डितत्रिवेणीदत्तात्म-  
 जशम्भुनाथकृते दैवज्ञाभरणे संज्ञाध्यायः १ ॥ दो० ॥  
 देवदत्त गुरुचरण युगअवबन्दों करजोर । जेहिकामाने  
 उंप्राण प्रिय सुत गिरिराज किशोर १ प्रथमहिं भाषैं भाव  
 फल जिहि बिधि कहेउ गणेश । जेहिलखि भाषैं ज्योति  
 षीजनसुख दुखउपदेश २ सौम्य स्वामियुत दृष्टिजोभाव  
 बृद्धि कहु तासु । पाप बिलोकित पापयुतभाव दुखितपर  
 कासु ३ तनुपति खलयुत त्रिकभवन तन सुखमिलै न  
 तेहि । त्रिक ६।२।१२ । पतिजौ तनगृहरहैं आधिठ्याधि  
 तेहिदेहि ४ क्रूररहैजो लग्नमें वीर्यहीन लग्नेश । रोग  
 बढैतेहि देहनिंति चिन्ता जनित कलेश ५ बुधगुरुकबि  
 युत लग्नपति लग्नरहै वाकेन्द्र । प्रबल सर्व सुख सम्पदा  
 सुनयन होयनरेन्द्र ६ लग्ननाथ खलखग भवन लग्न  
 सुथिर जो पाप । मनुज होइदृगअंध सों क्षीणकाय युत  
 ताप ७ चन्द सूर्य जेहिकेरहैं निर्बल पापमभार । व्याभि-  
 चारी तनक्षीण सोपरघर लहै अहार ८ । चौ० ॥ पापरहै जो  
 लग्न अगारा । होइ लग्न जो पाप मभारा ॥ रहै लग्न  
 तेसप्तमपापा । तेहि तन देहि नितै परितापा ॥ रवि शशि



तेसप्तमगृह बासी । होइ भौम पृष्ठोदय रासी ॥ परगृह  
 रत दृग हत लघु देही । मनुज होइ अघ कर्म सनेही ॥  
 धनाधीशवागीश समेता । रहै स्वगृह वा केन्द्र निकेता ॥  
 सम्पति राशि मनुज सो पावै । धन २ पति त्रिक ६  
 १२ संगधनहिं नशावै ॥ त्रिक गृहमें द्वादश १२ धन  
 २ नाथा । रहै लग्न पति भार्गव साथ ॥ तेजन होयँ  
 नेत्र ते हीना । सुख सम्पतिसो क्षीण मलीना ॥ रहै ब-  
 न्धुधन २ गृहयुत पापा । शुक्र सहित कृत लोचनतापा ॥  
 होहि भानु कवि त्रिक गृह माहीं । रात्रि अंध ताडष कहु  
 ताहीं ॥ सूर्यशुक्रतनुपति त्रिक भावै । तेहि जन्मान्ध ज्यो-  
 तिषीगावै ॥ पूर्णयोग पूरण फल दाता । खण्डित योग  
 खण्ड फल ख्याता ॥ रवि शशि द्वादश धन गृह बासा ।  
 नयन युग्म कर करै विधाता ॥ तहँ थिर दाहिनदृग हर  
 मंदा । भौम बाम लोचन दुख कंदा ॥ जननि ४ जनक  
 १० सुत ५ त्रियगृह ७ नाथा । त्रिकगृह ६ । १२ बसे  
 शुक्र शशि साथ ॥ नयन दुःख भाषैबुध ताके । नायक  
 रहै भाव को जाके ॥ दो० ॥ सहज भावपति भवन युत  
 त्रिक गृह करै निवास । बन्धुहीन तेहि जानिये ज्योतिष  
 शास्त्रविलास १ सहज भाव पति निज भवन केन्द्र रहै  
 शुभ दृष्ट । बन्धु सौख्य तेहि देहिबहु मेटै सकल अ-  
 रिष्ट २ सुख स्वामी निज भवन में सौम्य भाग्यपति  
 संग । महा राज्य सुख तेहि मिलै बाहन तुरग मतंग ३  
 सुरगुरु संयुत दृष्ट बालगनेरहँ सुवेश । उच्चराशिमें म-  
 नुजसो निश्चय होइ नरेश ४ सुखाधीशजो लाभगृह  
 सौम्य दृष्ट बलवान । गजबाजी राजीसहित सुखीरहै



## दैवज्ञाभरण ।

६ धनवान ५ तनुपति संयुत हिबुक ४ पति होइ आपने  
 धाम । तेहि वसुधा भवभवन सुख मिलै संपूरणकाम ६  
 सुखपति जोत्रिक गृहवसै क्षितिसुख मिलै ताहि । वा-  
 हन सुख औमित्र सुख बन्धु सौख्य तेहिनाहि ७ सौख्य  
 भवनपति दशमपति जेतने खलकेसंग । रहै त्रिकस्थित  
 खल प्रमित करै अग्नि गृहभंग ८ ॥ चौ० ॥ विद्यापति  
 बुध गुरुके संग । त्रिकगत कर विद्यागुण भंगा ॥ निज  
 गृहरहै नवमवा केन्द्रा । जनसो होइ धनाढ्य बुधेन्द्रा ॥  
 सुतपतिबाल बृद्धबलहीना । रहै जाहिकेसो मतिक्षीना ॥  
 सुतपति बुधगुरु युतबलवंता । जनसो होय विदितमति  
 मंता ॥ पंचमपति त्रिकमो ६ । ८ । १२ गुरुसंगा ।  
 वाचविहीनकरै मतिभंगा ॥ पित्रादिकगृहपति त्रिकगामी ।  
 बुधगुरुयुत कारक शठनामी ॥ गुरुते सुतपति त्रिकगृह  
 वासी । पुत्रसौख्य ससरकै न प्रकासी ॥ शुभयुत धर्म  
 पुत्र ५ तन १ नायक । कछु बिलम्ब परपुत्र प्रदायक ॥ कर्क  
 राशिसुत गृह में चन्दा । कन्या संतति देहि अनन्दा ॥  
 पंचम भवनरहै जोकूरा । देवराजगुरु संगतिपूरा ॥ संत-  
 ति सुखसों जननहिं पावै । श्रीशुकदेव व्यास सुतगावै ॥  
 सूर्यतनय सुतगृह निजगेहा । एकतनय सुखलहै सुदे-  
 हा ॥ कुंभेशानिसुत पंचकदाता । मृगगतसुत कन्यात्रयधा  
 ता ॥ कन्यातीनि देहि अंगारा । रहै जाहिके तनय अंगारा ॥  
 दो० ॥ गुरुके बलसुत पंचप्रद कर्क राशि सुतभाव ।  
 राहुकेतु वृषकर्क अज लघुवय सुतसुख गाव ६ सुरगुरु  
 जाके सुखभवन खेचरपाप समेत । तीसवर्षपरताहिको  
 संततिसो सुखदेत १० पंचम वा अष्टम दशम खलयुत



जेहिकेबन्द । तीसवरष परमनुजसोपावै पुत्रअनन्द ११  
यावत पापग्रहसहित सुतगृह शुभ ग्रहदृष्ट । तावतवर्ष  
प्रमाणलै कहिये वंश अरिष्ट १२ जौ अरिष्ट बुधकविशशी  
करै शम्भु अभिषेक । शम्भुनाथ कहिशिव कृपापावै  
तनय अनेक १३ सुरगुरु रहै अरिष्टजो सो वंशेश्वरमंत्र ।  
जपै औषधी यंत्रसो सुतसुखलहै स्वतंत्र १४ राहुकेतु  
शनिभौम रवि जेहिके वंशअगार । वंशेश्वर शिवपूजिकै  
सो सुख लहै उदार १५ ॥ चौ० ॥ तनुअष्टम खल्युतषष्ठशा ।  
देहि मनुजतन ब्रणकृतकेशा ॥ यहीभांति जनकादिक  
भावा । यहिविधि बुधतेहितन ब्रणगावा ॥ शिरषनदिन  
कर मुखब्रणचंदा । गलमंगल हृदिबुध ब्रणकंदा ॥ गुरु  
नाभीकबि लोचनपृष्ठा । वरणअधर शनिब्रणदअनिष्ठा ॥  
तनुपति संगराहुवाकेतू । सुस्थिररहै बुध भौमनिकेतू ॥  
बुधऔभौम बिलोकैताहीं । ताकेरोग होय दृगमाहीं ॥  
क्षितिपति बसैलग्न बलवंता । होइमनुजसो शत्रुनिहंता ॥  
धन २ गृहपरै षष्ठपतिजाके । सुतसोंमिलै वित्तबहुताके ॥  
धन गृहरहै सहज भवनेशा । हरै ग्रामदुख होइधनेशा ॥  
लग्नाष्टम पति अरिगृहवासी । नाभी माहिं रोग परिभा-  
सी ॥ भृगु लग्नेश षष्ठ गृह गंता । दक्षिण लोचन को  
परि हंता ॥ तनु पति शनि रिपु ६ मन्दिरगामी । चरण  
रोग को करै बेरामी ॥ राहु शत्रु गृह युत लग्नेशा । अ-  
धर दंतमों करै कलेशा ॥ केतु लग्नपति कुज बुध भ-  
वना । शत्रु दृष्टि कर गुद रुज पवना ॥ मङ्गल बुध रहै  
शत्रु निकेता । तनु पति बवासीर रुजदेता ॥ खल्युत  
शत्रुभवनमें चंदा । करैशीत कफते तनुमन्दा ॥ दो० ॥



क्षीण चन्द्रमा तनु भवन केन्द्र विराजै क्रूर । शुभखेचर  
 नहिं लखै तेहि रोगीहोइ जरूर १६ बुध गुरु भौम न  
 देखही रहैशुक्र गृह पाप । चंद्र सहित तेहि अङ्गमो होइ  
 रोग परिताप १७ रिपु ६ गृहपति निज लग्नमों लखै  
 न सौम्य न भोग । शत्रु बादते ताहि तन बाढ़ै चिन्ता  
 रोग १८ अरिगृहपति व्यय १२ गृहबसै राहु केतुवासंग ।  
 परगृह बसि भोजनकरै नीच वृत्ति धन भंग १९ जित-  
 ने गृह धन २ मद भवन रहै तासु पति दृष्ट । तै बिवाह  
 तेहिके कहे खल गृहकरै अरिष्ट २० धन २ कलत्रपति  
 त्रिक भवन जेते खलके संग । ज्योतिर्विद ताके कहै ते-  
 ती कामिनि भंग २१ षष्ठभाव मङ्गल रहै सप्तम गृहमें  
 राहु । अष्टम गृहमें शनिरहै करैत्रियातनु दाहु २२ ल-  
 ग्नाष्टम सप्तम सुखे ४ व्ययगृह भूमि कुमार । कामिनि  
 हंता पुरुषसो पुरुषहि घातैदार २३ ॥ चौ० ॥ कामिनि  
 धाम परै जो राहु । पाप युग्म देखै तेहि काहु ॥ बहु वि-  
 लम्बपर व्याहुतितासू । पुनि ताकरि त्रियलहै विनासू ॥  
 रहै दिवाकर जेहिके देहा । परैशनिश्चर सप्तम गेहा ॥  
 तासु त्रिया नहिं होइ सुगर्भा । चिंताबढ़ै चित्त बिनु अ-  
 र्भा ॥ सप्तम भौन रहै रवि मंदा । जीव अवीक्षित नभ  
 १० डहचंदा ॥ तासु त्रिया गुर्बिणि नहिं होई । शम्भु  
 नाथ यह निगम निचोई ॥ रिपु ६ सुत ५ मंदिर जल-  
 चर राशी । शनिवर मङ्गल गर्भ विनाशी ॥ उदय राशि  
 हो राशि निमंदा । कलाहीन रिपु गृह गतचंदा ॥ लखै  
 ताहि कह बुध हितकारी । गर्भिणि होइ न ताकीनारी ॥  
 अष्टमगृह कवि बुध बागीशा । जो थिर राशि बसै सम



तीशा ॥ सबप्रकार सो पावै कष्टा । नीच कर्म कारक  
 मतिनष्टा ॥ निधन नाथ जाके गृह लाभा । बाल्य बयस  
 दुख पुनि सुख आभा ॥ पाप सहित अल्पायु प्रदाता ।  
 सौम्य सहित दीर्घायु विधाता ॥ निधन नाथ त्रिक गृह  
 खलसंगा । तनु १ पति युतकर आयुष भंगा ॥ रविसुत  
 अष्टम आयुष कर्त्ता । रहैरिकेशगृह शोच प्रहर्त्ता ॥ रहै  
 निधन पति कोष अगारा । करै मनुज सो तस्करकारा ॥  
 तेहिके शत्रु होय अधिकारा । परदारा संगकरै बिहारा ॥  
 दो० ॥ अष्टम तनु पति जाहिके रहै शत्रु ६ मृतिधाम ।  
 हीन वीर्य जनदीन सो जय न लहै संग्राम २४ अष्टम  
 पति औ लग्न पति मृति रिपु मंदिर माहिं । वीर्यवंत  
 जो होइ तब देहि कीर्ति जय ताहिं २५ सुखपति जाके  
 लग्नमें संगे बल युत चंद । बाहनमत्त मतझसों पावैम-  
 नुज अनन्द २६ शुक्र सहित सुख पति वपुष १ पीन-  
 स बाहन देहि । गुरु युतबाजी राजिदै राजी राखै ते  
 हि २७ भाग्यनाथ तनु १ मों रहै सुरगुरु निरखैताहिं ।  
 शम्भु नाथकहि होइ सो राज्य पूज्य जग माहिं २८  
 भाग्य नाथ सुख ४ पति सहित रहैलग्न निजगेह । ल  
 खै मिलै तेहि सर्व सुख सम्पति सहित सनेह २९  
 भाग्यनाथ सुख ४ भवन पति जेहिके अष्टम भाव । भा  
 ग्य रहित जन होइ सो जगमें लहै अभाव ३० रहै  
 धर्म ६ पति लाभ ११ गृह लहै मनुज नृप मान । धर्म  
 वान सुखशील युत होय बहुत धनवान ३१ धन २ प-  
 ति तनुपति यान ४ पति जाके रहैं स्वगेह । बसै धर्म  
 पतिलग्नमें लक्ष्मीकरै सनेह ३२ ॥ छन्दत्रोटक ॥ जेहिके गुरु



भार्गव केन्द्रमहै । सुख नायक युक्त त्रिकोण रहै ॥ निज  
मंदिर संस्थित भाग्यपती । सोइ होइ महाधन क्षत्रपती ॥  
जिनके धरणी सुत कर्म १० परै । क्रियकर्म करै धन  
धान्य धरै ॥ सुर पूज्य रहै नभ १० मंदिरमें । गजवाजि  
सचिंतय बंदिर में ॥ दो० ॥ अष्टम पति तनु कर्म १०  
पतिको ६ । ५ ए लाभ गत केन्द्र । मनुज होय दीर्घायु  
सो सम्पति सहित नरेन्द्र ३३ गृह पंचक पण फर ५ । ८  
११ । २ हिबुक सहज भवनमें होइ । मध्यमायु तेहि बाल  
को कहैं गणक सबकोइ ३४ आपोक्लिम गृह में बसै पंच  
खेट बलहीन । हीनायुर्बल होइसो धनसें रहै मलीन ३५  
लग्न नाथ शनि गग १० न पति जाके अष्टम भाव ।  
मनुज होइ हीनायु सो रोगी चपलस्वभाव ३६ तनु १  
निधने ८ श्वर भौम युत जाके रिपु ६ मृति गेह । अष्ट  
मेशके दशह महँ लगै घाव तेहिदेह ३७ राहु केतुवा दि-  
वाकर मृति ८ पति तनु १ पति संग । रहै षष्ठ अष्टम  
भवन कहै देह व्रण भंग ३८ बाहन ४ पति अष्टम भ-  
वन जेहिके होइ सपाप । बाहनते वा चौरते मरण लहै  
युत ताप ३९ ॥ छन्दहरिगीतिका ॥ सुख नाथ भाग्य गृह  
रहै तेहि छत्र चामर चिंतना । थिर राज्य धाम नृपाल  
भूषण बाजि गज चिंतइमना ॥ सोइ लाभ गृह बहुलाभ  
दायक द्वादशे अघको करै । द्विज शम्भुनाथ गणेशभा-  
षेउ शम्भु सब दुखको हरै ४० व्ययनाथ जेहिके लग्न  
द्विज गृह वाच माधुरि भाषई । रुचि मान औ धनवान  
मानव होइ बहुपशु राखई ॥ जब धर्म धाम रहै व्यया-  
धिप खर्च राखै धर्मसो । यदि पाप खेट रहै संग धन



जाइ तासु कुकर्मसो ४१ ॥ दो० ॥ सदानन्द आचार्य  
पद बंदि सदा सुखदानि । शम्भुनाथ यह ग्रंथ मों भा-  
वाध्याय बखानि ॥ ४२ ॥ इति श्रीमद्गर्गवंशावतंसकंसवि-  
ध्वंसिप्रियराधाराधनलब्धलब्धवर्णवर्णितप्रकाण्डयशः  
काण्डमण्डित पण्डितत्रिवेणीदत्तात्मजशम्भुनाथकृतेदै-  
वज्ञाभरणेद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दोहा । श्रीश्यामाशङ्करचरण कमल हृदयकरिध्यान ।  
शम्भुनाथ यह योगफल भाषत मुनि अनुमान १ क्षीण  
चन्द्रसुत नवम गत क्रोधवंत अतिसोइ । राशि लग्न  
पति त्रिक परै सो दुर्बल तन होइ २ षष्ठाष्टम पति  
धर्मपति कहौं रहैं युतपाप । तासु त्रियापर पुरुषसँग  
विहरै मानि मिलाप ३ षष्ठाष्टम पति भौम शशि रहै  
मातृ ४ गृहमाहिं । शम्भुनाथ शुकदेव मुनि कहि पर-  
जातकताहिं ४ भाग्य षष्ठपति सुख बसै राहुकेतुकेसंग ।  
जननि तासु परपुरुष सँग विहरै सुन्दर अंग ५ षष्ठ  
धर्म ६ पति शनि सहित रहै जननि ४ स्थानु । शम्भु  
नाथ शुकदेव कहि शूद्र जाति तेहि जानु ६ वाक्पति  
भार्गव सहित सुखगत रिपु नवनाथ । तेहि परजातक  
जानिये जननि रमी द्विज साथ ७ सुख ४ गत बुध च-  
न्द्रमा रहि बैश्य जात तेहिजानु । सूर्य भौम तेहि सँग  
रहै क्षत्रज तेहि बखानु ८ ॥ चौपाई ॥ शुक्र बृहस्पति  
पाप समेता । रहै मदन धन षष्ठ निकेता ॥ मनुजहोइ  
सो परत्रिय गामी । सम्पति सहित शुभग तन कारी ॥  
रहै गगन १० पतितेहि गृह सैसो । तासु पिता कृतुपर  
त्रियजैसो ॥ तनु पति पाप सहित धन माहीं । तासुज



नक नृपत्रिय चित चाहें ॥ कामशत्रु धनपति धनधा-  
 मा । सखल तासुपति शिषिपर धामा ॥ यहिविधिभ्रातृ  
 ३ तात त्रियस्वामी । तनुपति सहित करै तेहि कारी ॥  
 तनुपति बुध वा मंगल चन्दा । रहै संगशिषि वामतम-  
 न्दा ॥ अष्टमषष्ठ द्वादशे भावै । श्वेत कुष्ठ तेहि कोविद  
 गावै ॥ रविशनिकुज लग्नाष्टम जाके । कृष्ण कुष्ठ होवै  
 तनताके ॥ तनुपति रवि युत त्रिक गृहमाहीं । देहिग  
 एडमाला रुजताहीं ॥ चन्द्ररहै जो जलचर राशी । स-  
 खल त्रिकालय माहिं निवासी ॥ कुज तहँ ग्रन्थि शस्त्र  
 व्रणकारी । राखै पित्त रोग तनुधारी ॥ बुध गुरु आम  
 बात रुगदाता । त्रिकगत भृगुक्षय रोग विधाता ॥ चंद्र  
 मेष वृष कुजशनि संगी । श्वेत कुष्ठ दायक तेहि अंगी ॥  
 कवि मंगल शशि शनि भृगुगेहा । बसै कर्क वृश्चिक  
 त्रिकदेहा ॥ मनुज होइ ते सौख्य बिहीना । कृष्ण कुष्ठ  
 तन रहै मलीना ॥ दोहा ॥ गुरु वा भृगुरिपु पतिसहित  
 रहै लग्न खल दृष्ट । बदन शोथतेहिके सदारहै कुरोग  
 अनिष्ट ६ खल युत वृश्चिक कर्क भुव रिपु पति तनु  
 गतक्रूर । लूताकृति बिस्फोटको तेहि तनहोइ जरूर १०  
 द्वादशगृहमें गुरु परै गृह्यरोग तेहि देहि । शनिकुज  
 व्ययगृहवाष्टमें व्रणी करै ध्रुव तेहि ११ अजबभूख वृ-  
 श्चिक मकर मन्दचन्द युतपाप । रहै नवम गृह ताहि  
 को करै खञ्ज पदताप १२ चन्द्रशत्रु पति खल सहित  
 जेहि के रहै पताल । शनि गुरुवा तेहिकौ हृदय रहै  
 सकम्प बेहाल १३ कुज शनि गुरु याके रहै दुष्ट दृष्ट  
 सुखधाम । तासुहृदय कम्पय सदा व्रणमय अष्टौयाम १४



क्षीणचन्द्र मंगल सहित रहे पापग्रहमाहिं । चंचल  
चित्तसो नित भ्रमै वित्त मिलै नहिं ताहिं १५ चन्द्ररहे  
जो लग्नमें गुरु हुलसै दृग पूर्ण । सोजनहास विलास  
रतकरै शत्रुको चूर्ण १६ शुभ ग्रहमें जोमन्द ग्रह रहे  
भौम बुधसाथ । सूर्य बिलोकै ताहि यदि मनुज होइ  
बुधनाथ १७ बुध भार्गव मृति ८ मद ७ दशम १० मं-  
दिर करै निवास । नारिप्रकृति सोहोइ नर नरसँग करै  
विलास १८ भृगु मंगल मद ७ दशम सुख ४ जो नि-  
वास कर योग । त्रिय स्वभाव नर होइसो नरसो राखै  
भोग १९ जिनकेबुध भृगु राहुसँग सप्तमभाव विराज ।  
लहै सर्वदा राज सुख होवै बेइयाबाज २० चन्द्रशुक्रते  
अग्र गृह मन्द रहे तनु धाम । भृगुशशि देखै ताहितन  
होइसुजाख सकाम २१ मन्द रहे जो केन्द्रमें देखै रवि  
कविचन्द । सूर्य गृह वा जनित यों होइ सुजाखीमन्द  
२२ रहे बक्रग्रह गृहमहै जेहिके दानवनन्द । क्षीण  
वीर्य सो होइजनकरैत्रिया आनन्द २३ मंगल जेहि  
के षष्ठ गृह रहे शुक्रके संग । लखै पापग्रह ताहिकोतेहि  
तन बढ़ै अनंग २४ शुक्र तुलाभख वृष मिथुन जाके  
करै निवास । काम अधिक बहु बाम सँग सोजन करै  
विलास २५ लखैन भार्गव चन्द्रमहि शशिको देखैमंद ।  
देहि नयन रुज मनुजको शौलकर्म १० मदचंद २६  
तनुगत मंगल चन्दको निरखै भृगु सुरचन्द । होइका  
णदृग मनुज सो नयन ज्योतिसो मन्द २७ अग्रभाग  
मंगल रहे रविते व्यय धन धाम । सौम्य सहित तेहि  
नयन महँ चिह्न करै मतिग्राम २८ रहे शुक्र शनि दृष्ट



जो लग्नाष्टम गृह माहिं । पीड़ातेजल बहै दृग चोंधर  
जानौ ताहिं २६ एक अंश व्यय १२ गृह रहै जेहि के  
मंगल चन्द । दृगमें किंचित चिह्न तेहि कहिय नयन  
सुखमंद ३० धनगृह जलचर राशि गत शनियुत अ-  
मृतभानु । शम्भुनाथ तेहिको कहै दादुमानु तेहिजानु ३१  
मन्द सहित जेहिके रहै भास्कर द्वादश केन्द्र । दद्रुमा-  
न तेहिको कहै श्रीशुकदेव बुधेन्द्र ३२ ॥ चौपाई ॥ जे  
हिके रिपु ६ गृह नायकचन्दा । पाप दृष्ट युत बलते  
मन्दा ॥ पिलहि रोग उपजै तनताके । शुभ खग जो न  
लखै चन्दाके ॥ सप्तम पति तनु नाथ निशेशा । पाप  
दृष्ट कर पिलह कलेशा ॥ तैसोपरै शनैश्चरयाके । रुज  
मंदाग्नि होइतन ताके ॥ होइ शनैश्चर क्रूर सो दृष्टा ।  
सुख ४ तन १ सप्तम ७ भाव अनिष्टा ॥ पिलहव्याधि  
युत सौख्य बिहीना । होइ मनुज शनि जो बलक्षीना ॥  
जाके क्रूरकेन्द्र गृहमाहीं । विकल शरीरकरै तबताहीं ॥  
रहै केन्द्र रवि निर्बल चन्दा । राखै तेहि आलसतेमंदा ॥  
दोहा ॥ रहै लग्नमें शुक्र जो लखै पूर्णदृग मंद । कटि  
तट शीतक बात बश कुटिल रहै दुखकन्द ३३ भृगु  
गुरुयुत चौथेभवन शनिबुध कुज यकठांव । विकलतासु  
करपदरहै परिपीडित करिहांव ३४ ॥ छंदमौक्तिकदाम ॥  
रहै सुख गेह नवाष्टम नाथ । खलग्रहते खग खेचरसा-  
थ ॥ कहै श्रुतिज्योतिष पंगुलताहिं । गणेश अचार्य  
निबंधन माहिं ॥ परै सुखमें शनि मंगलराहू । तथारिपु  
मंदिर वासर नाहू ॥ रहै बलहीन शुभग्रह संगु । कहै  
शुकदेव मुनी तेहि पंगु ॥ रह शनि षष्ठपती व्ययभाव ।



खल ग्रह बीक्षित क्षीण प्रभाव ॥ कहै तेहि ज्योतिष पं-  
गुल पाय । रहैदुखबायु रुजातनछाय ॥ दिवाकरसौम्य  
शनैश्चर साथ । परैमृति षष्ठ करै रुजहाथ ॥ रहै जेहि  
के शनि भार्गव कर्म । नपुंसक ताहिकरै हरि शर्म ॥ रहै  
रजनी करकेहरिरासि । लखै कुजको मदनालयवासि ॥  
करै तेहि मानव को तव काण । कहै यह ज्योतिष योग  
पुराण ॥ परस्पर देखहि चन्द्र दिनेश । करै जब वैषम  
राशि निवेश ॥ तथा निरखे बुध सूर्य कुमार । नपुंसक  
ताहि करै हतसार ॥ लखै विष मर्क्ष गतो ग्रह बक्र । रहै  
सम राशि निवासिय अर्क ॥ रहै विष मर्क्ष गतो तनु  
चंद । कुजे क्षित संठ करै तेहि मन्द ॥ रहैभृगु मंगल  
अष्टमगेह । करै तब बायु रुजा तेहिदेह ॥ करै तेहिके  
तनु अण्डक वृद्धि । कहै जेहिके मति शोक समृद्धि ॥  
दोहा ॥ भौम राशि गत चंद्रमा रहै सप्तम आगार । अ-  
ण्डरोग तेहिके कही शीत बात अधिकार ३५ शुक्र  
चंद्र कुज गृह परै गुरु शनि देखै ताहि । शुक्र रक्त के  
दोषते अण्डरोग बढ़िजाहि ३६ मेष वृषभ धनु लग्न  
जो होइ क्रूर ग्रह दृष्ट । दंत रोग तेहिको कही अष्टम  
परै अनिष्ट ३७ जन्म लग्न वाधनु वृषभ खलखगकरै  
निवास । मस्तक तासु पिराइ नित शिर खल्वाट बि-  
भास ३८ क्रूर रहै धनु नवम सुख औ पांचयेंअगार ।  
सो नर सुर कसूर करि निवसै कारागार ३९ जन्मल-  
ग्न धनु मेष वृष क्रूर खेट आकान्त । रसरी बन्धन  
तासुकहि दुःखितरहै नितान्त ४० शुक्ररहै शनिराशिमो  
षष्ठाष्टम व्ययगेह । होइमनुज रुजवानसो वहदुर्गंधित



देह ४१ षष्ठाधिप जेहिके मिथुन मकर कन्यकारासि । तेहि  
 के होइ कुगंधि तन मुखमें रोग निवासि ४२ याके निज  
 त्रिंशांशमें बसे शुक्र औ मन्द । तासु बदन दुर्गंधिते  
 पूर्ण रहै दुखफंद ४३ मेष लग्न में चन्द्रमा याके पाप  
 समेत । ताके मुख दुर्गंधि बहु कफते संयुत देत ४४ रहै  
 चंद्रमा पाप युत शशिवा पाप मभार । शशिते सप्तम  
 पाप ग्रह जननि जाइये द्वार ४५ रहै सूर्य जो पाप बिच  
 वा खल खचर समेत । खलते सप्तम रवि रहै जन कहि  
 मृतिदुख देत ४६ रिपु द्वादश गृह खल बसे देहि मातु  
 को त्राश । दशम चतुर्थ पापग्रह पितको करत बिदेश  
 ४७ रहै दिवाकर सहजग्रह जेठ सहज हरिलेहि । शनि  
 कनिष्ठको दुःख कर द्वौ दुःखद कुजतेहि ४८ जाके शशि  
 ते वित्त २ व्यय १ २ गृहन परै ग्रहकोइ । केमद्रुम सो योग  
 है लक्ष्मीनाशक सोइ ४९ ॥ छन्दहरिगीतिका ॥ शशिते रहै  
 धन भौन में ग्रह योगतौ सुनफाकही । धनधान्यसौख्य  
 समृद्धि दायक बुद्धि कीर्ति करै मही ॥ व्ययभाव माहिं  
 रहै ग्रह जब चन्द्रते रन फामनी । यहि योगमें जनमें  
 जनो बहु भोग ताहि मिलै घनी ॥ जब चन्द्रते धन २  
 बारहे १ २ गृह माहिं खेट कोऊ बसे । बुद्ध योग कहि  
 यह दुर्द्धराजन जन्म सम्पति सो लसे ॥ जब कर्म  
 १० पति धन २ कोण ५।६ केन्द्र १०।४।७।१ रहै बली  
 शुभ संगमो । गज बाजि राजि बिराजि तौ जन जीति  
 पावइ जंगमो ॥ धन भाग गेह रहै निशाकर केन्द्र बल  
 युत मंगलो । जनहोइ सो बसुधा नरेन्द्र सुधान्य धन  
 घर मंगलो ॥ त्रय भौनमें द्वै द्वै ग्रहै एकएक ग्रह त्रय



मंदिरो । यह छत्र चामर योग्य राज्य जु देत सम्पति  
चन्दिरो ॥ यदि मेष राशि रहे महीसुत भाग्य गृहमहँ  
जाहिके । धन धान्य बाजि अनेक पशु सुख वृद्धि दा-  
यक ताहिके ॥ वृषमेंरहै जब शुक्र नौमहि धेनु धनतेहि  
के बढ़े । बुध होइ मैथुन राशि धर्म ६ सुधर्मके श्रु-  
तिको बढ़े ५० ॥ छन्दचामर ॥ कर्क राशि माहि भाग्य  
गेह चन्द्रमा परै । शम्भु प्रीति कीर्ति तीर्थ वाससोसदा  
करै ॥ भाग्य भौन सिंह राशिमें रहे दिवाकरै । अस्त्र  
वृत्ति सो करै सदैव क्रोधसों जरै ॥ राहु भाग्य भौनका-  
मिनीय राशिमें बसै । कामिनीके राशि मो बिलाससेसदा  
फसै ॥ शुक्र जो रहे तुला निवासि भाग्य गेहमो । होइ  
सम्पदा सुखी सुधर्मके सनेहमो ॥ भूमि सून वृश्चिके  
रहे यदा सुधर्मसों । निष्ठु सो पखण्ड धर्म प्रीति कै  
कुकर्मसों ॥ बाप राशि वासदेव पूज्य भाग्य जाहिके ।  
राज पूज्य होइसो बढ़ेसो सिद्धि ताहिके ॥ भौम मक्रमें रहे  
सुभाग्य भाववासको । धर्महीन होइसो कुकर्म रीति  
भासको ॥ कुम्भ माहि शौरि भाग्य भावभासजो करै । कूप  
बापिका तड़ाग कृत्य कीर्ति विस्तरै ॥ मीनमें बलिष्ठ धर्म  
६ धाममें बृहस्पती । धर्म प्रीति रम्य कीर्ति देहि सौम्य  
सम्पती ॥ शम्भुनाथ श्रीपरास रोक्त योग गावही । शम्भु  
भक्ति गानसो नरेन्द्र मानपावही ॥ दो० ॥ श्रीदैवज्ञाभरण  
में वरणयो योगाध्याय । शम्भुनाथ श्रीगुरुदया श्यामा  
शिवपर ध्याय ५१ ॥ इति श्रीमद्राधाधनलब्धलब्धवर्ण  
वर्णितप्रकाशयशष्काण्डमण्डित पण्डितत्रिवेणीप्रसादा  
त्मजशम्भुनाथकृतेदैवज्ञाभरणेतृतीयोयोगाऽध्यायः ३ ॥



दो० ॥ रवि शनि मंगलको यदा भद्रो तिथि संयोग ।  
 इलेषा शतभिष कृत्तिका सो विष कन्या योग १ इलेषा  
 जो रवि दिनपरै युक्त दुइज तिथि माहिं । श्रीगणेश आ-  
 चार्य्यकह विधि भाषतहै ताहिं २ परै कृत्तिका शनि दि-  
 वस तिथि सप्तमीसमेत । नायक तेहि कामिनीकर निबसै  
 मृत्यु निकेत ३ शतभिष औ तिथि द्वादशी संयुत मंगल  
 बार । स्वामी सुख सो कामिनी कबहुँन लहै अगर ४  
 चौ० ॥ दुइ शुभ खेचर लग्न निवासी । एक पाप ग्रह  
 जो तेहि रासी ॥ दुइ खल खेट रहै अरि भावै । तेहि क-  
 न्यै विधवा श्रुति गावै ॥ इलेषा दुइजपरै शनिबार । शत-  
 भिष सप्तमि तिथि अगर ॥ रविबासर द्वादशी विशाषा ।  
 विधवा तेहि ज्योतिरविद भाषा ॥ क्रमते भौम शनिश्चर  
 भामा । परै नवम पंचम तनु धामा ॥ रण्डा होइ सत्य  
 सो नारी । बाल बयस भाषै श्रुति धारी ॥ चंद्र लग्नते  
 सप्तम स्वामी । होइ बली शुभ खग संगगामी ॥ विधवा  
 योग तासु मिटि जाई । संतति सम्पति सुख अधिकारि ॥  
 दो० ॥ रहै लग्न पति धन २ भवन लग्ने बसै धनेश । बुद्धि  
 वन्त धनवन्त सो होई धर्म नरेश ५ बसै लग्न पतिसहज  
 गृहसहज नाथ तनु माहिं । बंधु भ्रातृ सुखसों लहै कुल  
 दुइपूजै ताहिं ६ सुख ४ पति जो तनुमें परै तनुपति परै  
 पताल ४ । राज कार्य्य हित भूमि सुख सम्पति मिलै बि-  
 शाल ७ पंचमेश तनु १ गृहपरै तनु पति पंचम गेह ।  
 विद्यासुख मर्याद बहु सुत सुख पावै देह ८ रहै षष्ठपति  
 लग्नमें षष्ठभवन तनुनाथ । देह निरोगित होइ सो बि-  
 जय लहै नृप साथ ९ मदन सदन पति लग्नमें तनुपति



मदन ७ अगार । संतति सुख ताके कहै बहु त्रिय संग  
 बिहार १० अष्टमपति लग्नेरहै तनुपति अष्टम गेह ।  
 चौर कर्म सो करै नित तजै राज गृह देह ११ रहै नवम  
 पति लग्नमें तनु पति धर्म ६ निवासि । तीर्थाटन सो  
 करै बहु सुरगुरु भक्ति बिलासि १२ रहै कर्मपति लग्न  
 में बसै कर्म लग्नेश । तासु सौख्य महि सम्पदा देखि  
 सिहाइ नरेश १३ रहै लाभपति लग्नमें तनुपति लाभ  
 अगार । शुभ कर्मा दीर्घायु सो भूपतिहोइ उदार १४ रहै  
 लग्न पति द्वादशे द्वादश पति तनु माहिं । बहु रिपु शठ  
 अति कृपणमति रंक भाषियेताहिं १५ यहिविधिव्यत्य-  
 य योगफल शम्भुनाथ द्विजभाखि । श्रीगणेश शुकदेव  
 मुनिजोवरणयो श्रुतिसाखि १६ ॥ इति श्रीमद्राधाधाराधनल  
 ब्धलब्धवर्ण वर्णितयशष्काण्डमण्डितपाण्डितत्रिवेणी  
 दत्तात्मजशम्भुनाथकृतेदैवज्ञाभरणेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

दो० ॥ रहै लग्नपति बहु बली शुभ खेचरे सदृष्ट ।  
 साठिवर्ष सो जीवई मेटै सर्वअरिष्ट १ तनुते शशितेपूर्ण  
 शशि बुध गुरु भार्गव केन्द्र । रहै लग्न गुरु सो जियै  
 सत्तरि वर्ष नरेन्द्र २ रहै चंद्र सुत बहुबली शुभ खग क-  
 ण्टक १।४ ७।१० माहिं । खेटहीन अष्टम भवन जीवै  
 त्रिंश ३० समाहिं ३ लहै निधन गृह सौम्य ग्रह सौम्य  
 चतुष्टय बासि । चत्वारिंशत ४० वर्ष सो नर जीवै सुख  
 भासि ४ चंद्र रहै निज भवन में तनु मद सौम्य न भोग ।  
 साठिवर्ष सो जन जियै यह भाषै बुधलोग ५ शुभ ग्रह  
 पञ्चम नवम गृह सुर गुरु लग्न कुलीर । असीवर्ष सो  
 जन जियै कहैंदेव चित धीर ६ अष्टम पति तनु में रहै



तनुपति अष्टम भाव । क्रूर दृष्टि चौबिस वर्ष तासु अ-  
युर्दा गाव ७ लग्नाष्टम पति मृति भवन क्रूर बिलोकित  
होइ । वर्ष सताइस जीवनो तासुकहे सबकोइ ८ ॥ चौ० ॥  
खल युत गुरु तन १ शशि बलहीना । अष्टम गृहमें पाप  
मलीना ॥ आयुर्बल द्वाविंशति साला । भाषों ताको बु-  
द्धि विशाला ॥ खल ग्रह हीन लग्न औ चन्दा । लग्ने  
गुरु त्रिष ६ डाय ११ गमन्दा ॥ खलु बिहीन मृतिग्रह  
शुभकेन्द्रा । सत्तरि वर्ष आयु कहि जेन्द्रा ॥ रहै जीवतन  
कर्कट रासी । शुक्र वीर्य युत केन्द्र निवासी ॥ जीवै सो  
मानव शत वर्षा । सुत सम्पति युत सदा सहर्षा ॥ कर्क  
लग्न तनु गत बागीशा । निजगृह केन्द्रम सौम्य कवी-  
शा ॥ राहु शनैश्चर थिर त्रिषडाया । जीवन तासु वर्ष  
शत १०० गाया ॥ नवम भवन निवसै जो मन्दा । वीर्य-  
वान तनु मंदिर चन्दा ॥ रहै चन्द्र बाला भव धर्म्मा ।  
सो जीवै शत वर्ष सुकर्म्मा ॥ लग्नचन्द्रते अष्टम भावा ।  
होइ खेटको वास अभावा ॥ कवि गुरु केन्द्ररहै बलवंता ।  
कहि पूर्णायु तासु मति मंता ॥ तनुपति गुरु केन्द्रालय  
राजै । कोण भवनमें पाप समाजै ॥ वर्ष एकसै बीस प्र-  
माना । आयुर्बल तेहिकेर बखाना ॥ इन्दुरहै आपोक्लिम  
ग्रामी । आपोक्लिम ८।११।५।२।६ गृहमें तन स्वामी ॥  
लग्न चन्द्र को देखै पापा । जीवै बत्तिस वर्षसतापा ॥  
गुरु व्यय कंटक १।४।७।१० पापसमाजा । तनु पति  
नव रिपु सहज विराजा ॥ तीनि वर्ष आयुर्बल ताको ।  
रक्षक मृत्युञ्जय जप वाको ॥ रहै कर्ममें शशि अंगारा ।  
खग बिहीन मृति केन्द्र अंगारा ॥ तीनि वर्ष जीवै सो



प्राणी । श्रीगणेश शुकदेव बखानी ॥ अष्टमनाथ परैतनु  
 माहीं । शुभग्रहपरै न अष्टम पाहीं ॥ सो जन जीवै चालि-  
 स साला । कहै ज्योतिषीबुद्धि विशाला ॥ दो० ॥ रहै लग्न  
 पति मृति भवन मृति ८ पति तनु गृह माहिं । पांचवर्ष  
 सो जन जियै जो शुभलखै न ताहिं १ ॥ छन्दमत्तगयन्द ॥  
 मक्र दिवाकर मन्दबसै अरि ६ सोदर मंदिर माहिं नि-  
 वासी । केन्द्रम है मृति नाथ रहै चउआलिस वर्ष त-  
 दायु प्रकासी ॥ क्रूर बिलोकित लग्न पती शुभ खेटबली  
 शशि सौम्यके अंसा । सो तनु मान जिये धनवान ति-  
 हत्तरि वर्ष मुनींद्र प्रशंसा ॥ चंद्रते मन्द चरादिक पाप  
 रहै जब द्यंगमराशि बिलाशी । द्वादश अष्टम नायकनि-  
 बल आयु पंचावन वर्षविकाशी ॥ चंद्रज चंद्ररहै व्यय १२  
 अष्टम लग्नरहै गुरु शुक्र समेता । एकनक्षत्र करै दू वास  
 जियै जन वर्ष पचास सुचेता ॥ दो० ॥ शशिते तनुतेनि-  
 धनपतिपरै रिष्क १२ गृह केन्द्र । ताको अट्टाइस वरष  
 आयुकहैं विबुधेन्द्र ३ ॥ छन्दभूलना ॥ केन्द्र गृह सौम्य  
 ग्रह हीन जोहोइ जनि कोइ ग्रह भाव अठये निवासी ।  
 त्रिंश ३० मित साल सो बाल जीवै भवन मृत्यु ८ पति  
 होइ जो केन्द्ररासी ॥ क्षीण शशि पापयुत होइ अष्टम भ-  
 वन लग्नपति होइ बलसे विहीना । बालसो चालिस जी-  
 वै जगत हालयह भाषि ज्योतिष प्रवीना ॥ मन्द जो होइ  
 सुत ५ धर्म ६ धन २ आठयें लाभ ११ गृह माहिं शनि  
 सूर्यसंगा । बैरि अष्टम भवन बारहें क्षीणबल बिंशमित  
 वर्ष सो धारिअंगा ॥ अष्टमें द्वादशे दूसरे पापग्रह होइ  
 शशि राहु जो संग त्यागी । बिंशमित सालसो बालजी-



वै मही भाषि शुकदेवमुनिवर विरागी ४ ॥ दो० ॥ जीव  
 शुक तनुमें रहै वापंचम गृह माहिं । बहु आयुर्वल तासु  
 कहु सम्पति सेवै ताहिं ५ देखि ग्रहनको बलाबल तेहि  
 सबभांति विचारि । सत्यहोइ तेहिको बचन जो भाषै श्रुति  
 धारि ६ बुधि बर लक्ष्मीदत्तको धरि शुभ आज्ञा माथ ।  
 श्रीदैवज्ञाभरण यह ग्रन्थरचे शिवनाथ ७ ॥ छन्दत्रिभंगी ॥  
 दुरगा प्रसादः प्रियश्रुतिबादः हरिगुणस्वादः धरणितले ।  
 मुनिगर्ग सुवंशे जन्मिप्रशंसे द्विजकुलहंसे गुणविमले ॥  
 क्षपियाभिधग्रामे रघुपति धामे निकट नृकामे हितदाता ।  
 सुयशो विख्याता ग्रंथविधाता धर्मनिधाता जगत्राता ॥  
 तेहिकेर कुमारो पञ्चउदारो श्रुतिगुणधारो धर्मगमः ।  
 ठाकुरप्रसादो जितअरिबादो प्रियहरिनादो योगरमः ॥  
 धृतपरमाचारो भूतिपरिवारो कृष्णपियारो जेहि मनमें ।  
 क्षितिबिदित अमोढा पतिश्रित सोढातप बल पोढा विबु-  
 धनमें ॥ कृष्णदत्त तेहिते कनिष्ठ हरिनिष्ठ उदारो । ध-  
 रणि द्युमणि मणि मिश्रया सुयुग चरण पखारो ॥ बाक  
 सिद्धि यश चन्द्रउदित जेहिको जगमाहीं । वर्तमान  
 दिन रैन चैनकर जाकरछाहीं ॥ बुधवर कन्हईराम  
 भये तेहि के लघुभ्राता । राधाकृष्ण पदाब्ज भक्तिचि-  
 न्तामणिधाता ॥ नरपतिचन्द सुबन्ध चरणकोबिद जन  
 त्राता । बासुदेव बुध जनक जगति कीरति विख्याता ॥  
 छन्दचामरसंगीत ॥ ताहिते कनिष्ठ श्रीगोपालदत्तपण्डि-  
 तो । कृष्णप्रीति धर्म नीति वेदरीति मण्डितो ॥ जक्त  
 कीर्ति मन्त सन्त चर्णतो सभाजितो । लब्ध वर्ण लब्ज  
 वर्ण धीसु वर्ण राजितो ॥



छन्द ॥

श्रीबेणी प्रसाद तासु लघु सोदर जाये ।  
श्रीराधापद सेइ सिद्धि ऋधि बांछितपाये ॥  
शम्भुनाथ सुततासुग्रंथ बिरचे अभिरामा ।  
हृदयध्याइ अतिसदयनित्तशिवसंयुतश्यामा ॥

इति श्रीमद्राधाराधनलब्धलब्धवर्णवर्णितप्रकाण्डयश  
ष्काण्डमण्डितपण्डितत्रिवेणीप्रसादात्मजशम्भुनाथ  
कृते दैवज्ञाभरणे पंचमोऽध्यायः ५ ॥

इति

मुन्शी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेखानेमें छापा गया

सितम्बर सन् १८९२ ई० ॥



# इशितहार ॥

लग्नचन्द्रिकासटीक ॥

जिसको उन्नामप्रदेशान्तर्गत तारगांव निवासि पण्डित  
रामबिहारी सुकुलने भाषामें टीकाकिया है ॥

भगवद्गीतानवलभाष्य ॥

जोकि सकल निगम, पुराण, स्मृति, सांख्यादि का  
सारभूत परमरहस्य है जिसको कर्णुखाबाद निवासि  
स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजीने गीताभाष्यानुसार सं-  
स्कृतसे हिन्दीभाषामें रचनाकिया जिसमें भगवद्गीता  
का मूलश्लोक उसकेनीचे संस्कृतशङ्करभाष्य तत्पश्चात्  
आनन्दगिरि और श्रीधरस्वामिकृत टीका और सबसे  
पीछे शङ्करभाष्यका भाषानुवाद नवलभाष्य नाम से  
वर्णितहै इसपुस्तकको जिसने अवलोकन कियाहै अव-  
श्यही उसने मोलली है यहपुस्तकदेखनेहीके योग्यहै ॥

संग्रहशिरोमणि ॥

नौराहीग्राम निवासि पण्डित सरयूप्रसाद संग्रहीत  
जिसमें ज्योतिष और पुराणस्मृतिके अनेकग्रन्थोंसे अ-  
यन, तिथि, बार, नक्षत्र, योग, ताराका शुभाऽशुभज्ञान  
और उनकाफल, लग्नगोचर, विवाह, यात्रा, गृहप्रवेश  
मिश्रतिथि, निर्णयादि प्रकरण व व्रतादिका परिहार  
आदि अनेक विषयहैं इसमें वह सब रोजमरहकी बातें  
हैं जिनका काम सबको पड़ताहै जिनके पास यह छोटी  
पुस्तक है उनको हरसमय बड़ी पुस्तकके देखने की  
आवश्यकता नहीं है ॥